Class - VII अमृतवाणी (दोहे) (1)

1) क) संत कबीरदास जी ने गुरु और ईश्वर दोनों के साथ खड़े होने पर पहले गुरु के चरण छूने को कहा है क्योंकि उन्होंने हमें ईश्वर तक जाने का मार्ग बताया है।

2

ख) ईश्वर उनके हृदय में वास करता है जिनके हृदय में सच्चाई होती है।

3) क) खजूर के पेड़ जैसा बनने के लिए संत कबीर ने मना किया है। इस दोहे के माध्यम से कबीर कहना चाहते हैं कि सिर्फ बड़ा होने से कुछ नहीं होता, बड़ा होने के लिए विनम्रता ज़रूरी गुण है। जिस प्रकार खजूर का पेड़ इतना ऊँचा होने के बावजूद न पंथी को छाया दे सकता है और न ही उसके फल आसानी से तोड़े जा सकते हैं।

ख) हमें सदैव ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को जीता जा सके, स्वयं भी प्रसन्न रहें और अन्य को भी प्रसन्न रखें, मीठी वाणी के प्रयोग

से हम खुद भी शीतल अर्थात् शांत रहेंगे और दूसरों को भी शीतल अर्थात् शांत रखने का प्रयास करेंगे।

ग) कवि के अनुसार, कभी भी आज के काम को कल पर नहीं टालना चाहिए। कबीर के दोहे से हमें जीवन में समय के महत्व का पता चलता है। उनके अनुसार हमें हमेशा समय रहते ही काम समाप्त कर लेना चाहिए। कभी भी काम को टालना नहीं चाहिए, क्या पता अगले ही पल प्रलय हो जाए।